Vol 3 Issue 7 Aug 2013 ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

साहित्य और समाज : अन्तसंबंध

वडजे राजेंद्र कैलास
हिंदी विभाग ए. आर. बुर्ला. महिला वरिष्ट महाविद्यालय सोलापूर.

सारांश :जिस प्रकार सामाजिक संकल्पना की पूर्ति में स्त्री और पुरूष का अन्तर्भूत होना महत्त्वपूर्ण माना जाता है, उसी प्रकार किसी भी देश की जनसंख्या, क्षेत्रफल उसका अभिशाप और वरदान भी हो सकता है। भारत एक विशाल देश होने से आज भी अशिक्षा, बेरोजगारी और भुखमरी की समस्या मुँहबाये खडी है। धर्म हो या संस्कृति सभी पर इसका प्रभाव परिलक्षित होता है लेकिन भारत की इन समस्याओं को सबसे पहले पहचानने–परखनेवाला साहित्य ही रहा है, जिनमें समस्याओं एवं समाधानों को जीवन की वास्तविकता के साथ परिलक्षित करता है।

अतःसाहित्य और समाज के अन्तसंबंध को देखने के पहले हम 'समाज' का अर्थ एवं परिभाषा को देखना चाहेंगे।

***प्रस्तवाना* :**

समाज अर्थ एवं परिभाषा :

सामान्यतः समाज से अभिप्राय कुछ व्यक्तियों के समुह से है। हिंदी के अधिकांश शब्दकोशों के साथ पाश्चात्य एवं भारतीय विध्दानों की परिभाशाओं में भी समाज का अर्थ ऐसा ही मिलता है।

1. नालंदा विशाल शब्दसागर : 'समाज'–समुह, गिरोह।
''एक स्थान पर रहनेवाला अथवा एकही प्रकार का कार्य करनेवाले लोगों का दल, वर्ग या समुदाय, समुह।''1
2. आधुनिक हिंदी शब्दकोश : 'समाज'–संघ, संघात, समष्टि, सभा।
''मानव समूह, जनसमुदाय, लोकजन।''2
3. डॉ.मुहम्मद फरीदुद्दीन के अनुसार : ''मनुष्या को अपना मानवीय अस्तित्व बनाए रखने के लिए अन्य मनुष्यों के साथ रहने की परम आवश्यकता है।''
''इसके लिए उसे अपने आस–पास के मनुश्यों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करना पडेगा ही। व्यक्तियों के इन्हीं पारस्पारिक संबंधों के जाल को 'समाज' कहते है।''3
4. मैकाइवर के अनुसार : ''समाज प्रत्येक प्रकार एवं अंश के संबंधो का समावेश करता है, जो मनुश्यों द्वारा किसी दूसरे सामाजिक प्राणी से या मनुष्य से स्थापित किए जाते है। 'समाज' शब्द का जब विशेषण रहित प्रयोग किया जाता है, तो उसका अभिप्राय सामाजिक संबंधों की पूर्ण व्यवस्था से होता है।''4

सारांशतः कह सकते है कि, समाज व्यक्तिरूपी इकाईयों का वह बृहत्तर समुच्चय है, जो अपने विकास और अपनी व्यवस्था के लिए हितकारी प्रणालियों का विधान करके सामूहिक रूप से उसका अनुपालन करता है।

साहित्य और समाज के बीच सनातन अन्तसंबंध रहा है। समाज के संपर्क और सहयोग से ही मनुष्य का जैविक और मानसिक विकास संभव होता है। सामाजिक साहचर्य से ही मनुष्य विविध ज्ञान शाखाओं को अर्जित करता है। और संपर्को द्वारा संवेदनशीलता और अनुभूति क्षमता को समृध्द करता है। सामाजिक परिवेश में विकसित उसकी संवेदनात्मक अनुभूतियों ही भाषिक अभिव्यक्ति के माध्यम से साहित्य का रूप धारण करती है। परिणामतः श्रेष्ठ साहित्य श्रेष्ठ समाज का द्योत्तक बनता है, और श्रेष्ठ समाज श्रेष्ठ साहित्य का विधायक। इस संबंध में डॉ. रत्नाकर पांडेय लिखते है– ''साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध मानवता और सभ्यता के विकास का मूल आधार है।''5

साहित्यकार सामाजिक प्राणी होने के कारण वह अपने परिवेश रीति–रिवाज, धर्म–कर्म, मानवीय व्यवहार आदि से साहित्य सृजन की प्रेरणा ग्रहण करते हुए साहित्य के माध्यम से प्रभावित होकर लक्ष्य तक पहुँचता है। इस संबंध में साहित्य सम्राट प्रेमचंद ने सावधान करते हुए कहा है कि– ''साहित्य किसी के पीछे चलनेवाली चीज नहीं हैं, उससे आगे चलनेवाला एडवांस गार्ड है।''6 अतः साहित्य समाज को दिशानिर्देशन का काम करता है। और साहित्यकार को 'सहितस्य भाव' का तथ्य ही साहित्य को समाज के साथ गहरे रूप में आबध्द कर देता है। इस संबंध में मंजू पाण्डेय कहती है– ''साहित्य वह होता है जो हमारे भावों और विचारों को इकट्ठा रखकर या मानव जाति से एकसूत्रता उत्पन्न करके हित संपादन करता है।''7

साहित्य की अपनी पहचान होती है। साहित्य वह सच्चा इतिहास है जो अपने समाज के साथ देशकाल एवं वातावरण का जैसा चित्रण होता है वैसा ही चित्रित करता है। जिनमें साहित्यकार की भूमिका समाजसुधार की भावना से प्रेरित होकर आदर्श की स्थापना करने की होती है। फलतः समाज उस चित्रण से प्रभावित होकर स्वचिंतन के लिए विवश हो जाता है। वाल्मीकी ने रामायण में आदर्श दृष्टिकोण से विभिन्न पहलुओं के चित्रण में बताया कि मानव समाज को कौनसा पथ संतोष और संतोष और सुख की अनुभूति कराता है।

साहित्या और समाज के पारस्पारिक संबंध को लेकर प्राथमिक विवेचना हमें युनानी इतिहासकार–'हेरोदोतस' मे मिलती है। समाज पध्दति का मानवचेतना और मनुष्य के लोक व्यवहार पर क्या प्रभाव पडता है?किन्तु इस विषय में विस्तृत साहित्य का निर्माण 19 वी शती में 'टेन' की रचनाओं में होता है। क्योंकि साहित्य और समाज की पारस्पारिक किया–प्रति किया का उपयोग समीक्षक की अपेक्षा इतिहासकार के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। 19 वी शती में ही साहित्य और समाज के अंतरावलंबन को लेकर विवेचन सामने आया। 'टेन' का कहना है कि–किसी भी युग की सांस्कृतिक अन्विती का अध्ययन जाति–धर्म, युग–धर्म, और सामाजिक प्रवृत्तियों के समीकृत अध्ययन से हो सकता है।

जीवन को अधिक से अधिक सुखद बनाने के लिए मानव का सदैव से प्रयास रहा है। राजनीति, विज्ञान, धर्म, अर्थशास्त्र आदि सभी इस प्रयत्न में लगे रहते है, किन्तु इस दिशा में किए गए सारे प्रयत्न अपूर्ण रहे है और आंशिक रूप में भी सफल नहीं हो पाए है, क्योंकि मानव का मस्तिष्क प्रभावित होकर भी उसका हृदय अप्रभावित बना रहता है। कोरे नियम, उपदेश मानव के हृय को परिवर्तित नही कर

पाते। लेकिन जहॉ पर ये सभी सफल नहीं हो पाते वहॉ पर साहित्य सफल होता आया है।

साहित्य कठिण–से–कठिण बात को सरलतम ढंग से प्रस्तुत करता है। अनादिकाल से ही साहित्य हमारे समाज का विभिन्न कोणों से चित्रण करता आया है।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि साहित्यकार सामाजिक चेतना से अनुप्राणित रहता है। उसका दृष्टिकोन आदर्शवादी हो या यथार्थवादी हो उसके साहित्य में जहॉ एक ओर सांस्कृतिक यथार्थ को व्यंजित करने की तत्परता रहती है, वहीं पर समाज के वांछित विकास के लिए बेहतर विकल्प देने की अभिलाषा भी रहती है।

साहित्यकार की प्रतिबध्दता :–

साहित्यकार समाज का संवेदनशील सदस्य होता है। अपने समकालीन सामाजिक जीवन की यथार्थ स्थितियॉ उसे सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक तीव्रता से प्रभावित करती है। इन्हीं परिवेश के दबाओं से आवेशित होकर वह रचना कर्म में प्रवृत्त होता है। अर्थात रचनाकार समाज के साथ अविरल भाव से जुडा हुआ होने से समकालीन जीवन के प्रति होनेवाली प्रतिक्रिया ही साहित्य का प्रतिपाद्य होती है। वह एक साथ सामाजिक चेतना, व्यक्तिगत दायित्व, कला सृजन और अपने युग के इतिहास बोध के प्रति प्रतिबध्द होता है। प्रकृति से ही कल्पनाशील, संवेदनशील और भविष्यदर्शी होने के कारण उसकी रचना भूत, भविष्य और वर्तमान के संबंध से मानव निर्यात को एक निश्चित दिशा और आकार देने का प्रयास करता है। इन्ही विशेषताओं के कारण कोई रचना कालजयी बनती है तो कोई हीन कोटी की मानी जाती है।

साहित्यकार की प्रतिबध्दता को लेकर डॉ. रामजी तिवारी का कथन लक्षणीय माना जाएगा– ''यथार्थ अनुभव और रचनात्मक अनुभव मे मूलभूत अंतर होने के काण साहित्यकार न तो समाज का दर्पण होता है और न ही प्रतिबिंब। उसके भोगनेवाले मन और रचित मनिशी की रगड से उत्पन्न होनेवाला रचनात्मक अनुभव समाज की संभावना को आकार देता है। अनुभव की व्यापकता और जीवनबोध की समग्रता के कारण उसका साहित्य समसामायिक सीमा का अतिक्रमण करके कालजयिता प्राप्त करता है। जिसमें प्रत्येक युग का मनुष्य अपनी समस्याओं का समाधान खोजता है और अपने जीवन का प्रत्याभिज्ञान करता है।''8

अंतः समग्रता कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है, इसलिए साहित्य और समाज का अन्तसंबंध एक–दुसरे पर आश्रित है। समाज की समस्याऍ साहित्य को उव्देलीत करती है लेकिन रचनात्मक अनुभूति समाज जीवन में पूर्णता के दर्शन कराती है। साहित्य समाज को व्यथित और व्याकुल क्षणों में दिशा–निर्देशन कर समाज की निराशा को दूर करता है। साथ में साहित्य आदर्श बंधुता का धर्म निभाता है। माता के समान लालन–पालन करता है। पिता के समान रक्षा और प्रिया के समान आकर्षक मूर्ति धारण करके समाज जीवन में संगीत का संचार करता है। इसलिए साहित्य और समाज एक दूसरे को प्रतिबिंबित करते है।

साहित्य और समाज समर्थ साहित्यकार, ओजस्वी वक्ता और प्रखर चिन्तर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य की विभिन्न विधाओं और समस्याओं को समर्पित चिन्तन पूर्ण अठारह निबन्धों का संकलन है।

यह पुस्तक जहॉ एक तरफ–परम्परा और भारतीय साहित्य, साहित्य पर विज्ञान का प्रभाव, साहित्य में आधुनिकता, समाजवाद के अन्दर साहित्य, साहित्य का नूतन ध्येय, कलाकार की सफलता, भविष्य के लिए लिखने की बात; लेखकों का कार्य शिविर, हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव, पाकिस्तान के पीछे साहित्य की प्रेरणा, श्री अरविन्द की साहित्यिक मान्यताऍ जॉर्ज रसल का साहित्य–चिन्तन आदि निबन्धों द्वारा समाज और साहित्य पर प्रकाश डालती है तो दूसरी तरफ–अर्धनारीश्वर, कला, धर्म और विज्ञान, आउट–साइडर, रवीन्द्रनाथ की राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्टीयता अभारतीय हैं?, महात्मा टॉलस्टॉय जैसे विषयों को भी हमारे सम्मुख लाती है।

पठनीय और मननीय निबन्धों से सुसज्जित यह पुस्तक राष्ट्रकवि दिनकर के चिन्तन स्वरूप को उद्घाटित करने वाली एक श्रेष्ठ बौध्दिक कृति है।

जातियॉ जिस प्रकार के विचारों में विश्वास करती है, उनके कर्म भी वैसे ही हो जाते हैं, उनकी कलाऍ भी वैसी ही हो जाती है। वैदिक युग के आर्य निवृत्तिवादी नहीं थे। दुनिया को वे केवल त्याग नहीं, भोग की भी वस्तु मानते थे। नरक की कल्पना उसके भीतर नहीं जगी थी। वे मानते थे कि पराक्रमी मनुष्य जैसे जीते जी सुख भोगता है, वैसे ही वह स्वर्ग पहुॅचकर भी सुख ही भोगता है। ''हे पितर, स्वर्ग में इन्द्र के साथ विहार कीजिए।'' ''हे इन्द्र, हमाके घोड़ों को मजबूत करो, हमारे पूत्रों को बलवान बनाओ।'' ऐसी प्रार्थनाऍ वही कर सकता है, जो जीवन को सत्य तथा धरती को सुख और कर्म–किर्ति का स्थान समझता है।

यद्यपि उपनिशद् वेदों के बाद ही प्रकट होने लगे थे, किन्तु संस्कृत साहित्य पर प्रभाव वैदिक विचारधारा का ही चलता रहा, उपनिशद् धीरे–धीरे ही काम करते रहे। जिसे साहित्य के कारण संस्कृत भाषा का संसार में इतना नाम है, वह सारा–का–सारा साहित्य वैदिक विचारधारा के अधीन लिखा गया था। उपनिशदों का प्रभाव संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ काव्यों पर नही के समान है। उपनिशदों की निवृत्तिमार्गी शिक्षा उस समय बढ़ी, जब देश में जैन और बौध्द दर्शनों का जोर हुआ। वैदिक दर्शन आशावाद, सुखभोग और उत्साह का दर्शन था। किन्तु हिन्दुओं का आज का दर्शन निवृत्ति, अहिंसा, वैराग्य और पस्ती का दर्शन है। यह मेरे विचार से उपनिशदों एवं बौध्द और जैन दर्शनों के दीर्घ सेवन का परिणाम है और इसका प्रभाव हम संस्कृत के श्रेष्ठ काव्यों में कम, प्राकृत, अपभ्रंश और भारत की आधुनिक भाषाओं में अधिक देखते है। फिर भी यह सच है कि भारत का जो मन आज आधुनिक बनने को प्रयत कर रहा है, वह इसी निवृत्तिमार्गी संस्कार में रॅगा हुआ है।

एक विचित्रता और है कि संस्कृत साहित्य में हमें विद्रोह का स्वर कहीं भी सुनाई नहीं देता है। गरीबी संस्कृत काल में भी रही होगी, अन्याय उस समय भी होते होंगे। जाति–प्रथा जितनी विशैली आज है, संस्कृत काल में उससे कहीं अधिक भयानक रही होगी। जो शूद्र वेद सुन ले, उसके कानों में पिघला हुआ रांगा पिला दो, यह धर्म उसी युग का आविश्कार था। किन्तु संस्कृत में कोई भी कवि ऐसा नहीं जनमा, जो यह कहने की हिम्मत करे कि यह अन्याय है और मैं इसका विरोध करूॅगा। जन्मांतरवाद और कर्मफलवाद के सिध्दान्त इस जोर से स्वीकृति किए जा चुके थे कि हर चिन्तक यह सोचकर सन्तुश्ट था कि जहॉ भी जो कुछ हो रहा है, वह सब–का–सब ठीक है और विश्वविधान की आलोचना वही करेगा, जिसमें आस्तिकता की कोई गन्ध नहीं हो। यहॉ यह भी ध्यान देने की बात है कि वैदिक युग के आर्य इतने अमर्शहीन नहीं थे, न उनकी स्वाधीन चिन्ता इतनी दबी हुई थी। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में ऋषि ने प्रश्न उठाया है कि जब कुछ नहीं था, तब क्या था और सुष्टि उसे शून्य में से कैसे प्रकट हुई और सृष्टि जब शून्य में से निकल रही थी, तब उसे किसने देखा था। और ऋषि ने स्वयं ही उत्तर दिया है कि इस सृष्टि का जो अध्यक्ष परम व्योम में रहता है, शायद उसने सृष्टि को जन्म लेते देख हो अथव क्या पता कि उसने भी नहीं देखा हो। एक आस्तिक ऋषि की यह शंका बतलाती है कि आर्य सत्य की शोध में बड़े ही निर्मोही और कठोर थे तथा श्रध्द उनके चिन्तन को कमजोर नहीं कर सकती थी।

संस्कृत साहित्य में विद्रोही की परम्परा नहीं थी। भारत में विद्रोह के पहले बीज गौतम बुध्द ने गिराए और वे अंकुरित चाहे जब भी हुए हों, पल्लवित और पुष्पित वे तब हुए, जब सुध्द–साधुओं के समय आया। हिन्दी में इस विद्रोही की आग कबीर की वाणी में फुटी थी और

वह आग अभी तक बुझी नहीं है। असल में भारतीय संस्कृति की दो धाराएँ हैं, जो प्रत्यक्ष देखी जा सकती है। एक के ऋषि मनुऔर वशिष्ठ, दार्शनिक शंकराचार्य और कवि तुलसीदास, सूरदार, विद्यापति, कम्बन और पोतन्ना हैं। दूसरी धारा के ऋषि स्वयं गौतम बुध्द, दार्शनिक नागार्जुन और वसुबन्धु तथ कवि सिध्द–साधु, कबीर, दादूदयाल, नानकदेव और वेमना हैं। आधुनिक युग में पहली धारा के प्रतीक महामना पंडित मदनमोहन मालवीय हुए हैं और दूसरी धारा के स्वयं गांधीजी। ज्यों–ज्यों समय बीतता जाता है, इन दो धाराओं के बीच की दूरी घटती जाती है। लेकिन दिखाई यह भी पड़ता बै कि धर्म के क्षेत्र में हिन्दू समाज तुलसीदास से हटकर कबीरदास के समीप होता जा रहा है। तुलसीदास का जितना जोर भक्ति पर था, उतना ही जोर व्रतों, अनुष्ठानों और धर्म के ब्राह्म आचारों पर ही था। किन्तु कबीरदास ने अनुष्ठानों को ढकोसला कहा। नए जमाने के धर्मानुरागियों की दृष्टि में भी अनुष्ठानों का कोई खास महत्व नहीं है।

साहित्य का स्वभाव है कि वह पुरानी बातों में कवित्व जरा अधिक देखता है। अतएव पुरानी परम्पराएँ आज भी साहित्य का विषय बन जाती है, किन्तु नवयुग का कवि उन्हें नई दृष्टि से देखता है और शिक्षा भी वह उनसे नई ही निकालता है। सत्यकामजाबाल की कथा पुराणों में यह दिखाने को गढ़ी गई होगी कि सत्य बोलने वाले को गोत्र के बारे में जिज्ञासा बेकार है। किन्तु अब हम उससे यह शिक्षा लेते हैं कि अनव्याही नारी की सन्तान भी सम्मान का आसन पा सकती है।

पहले धर्म और कविता के बीच प्रगाढ़ संबंध था। अ बवह संबंध विरल भी नहीं रहा, बिलकुल टूट गया है। पहले के कवि कहते थे कि, ''रसिक रीझेंगे तो समझूँगा कि मैंने कविता लिखी है। यदि रसिक नहीं रीझें, तो यह काव्य राधा और श्याम के नाम स्मरण का बहाना है।'' आज धार्मिक कथा और चरित्र को भी कवि इसलिए नहीं उठाता कि उसे भगवान का स्मरण आता है, बल्कि इसलिए कि वह अपने सौन्दर्यबोध को अभिव्यक्त करना चाहता है। साहित्य में बहुत दिनों तक यह परिपाटी रही कि कविगण अपने काव्य का आरम्भ देवता की स्तुति से करते थे। लेकिन अब वह परिपाटी समाप्त हो गई। हिन्दी में राश्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त इस परिपाटी के अन्तिम उदाहरण थे। अब कोई भी कवि अपने ग्रन्थ का आरम्भ देव–स्तुति से नहीं करता।

एक विचित्रता घटित हुई है, जिसका उल्लेख प्रासंगिक लगता है। जब हम लोग काव्य के क्षेत्र में आए थे, कवियों में पिंगल पढ़ने का रिवाज था। एक कहावत चलती थी कि:

बिना कोक जो रजि करे, बिन गीता भख ज्ञान,
बिना पिंगल कविता रचै, तीनों पशु समान।

लेकिन मेरा खयाल है, अब पिंगल कोई नहीं पढ़ता, न कोई प्रस्तार साधता है। जब छनद ही रूखसत हो गए, तब फिर पिंगल की जरूरत क्या है?

पिंगल सीखते समय हमने यह भी शिक्षा ली थी कि ग्रन्थ ने आदि छन्द का प्रथम गण शुभ ही रखना चाहिए, अशुभ नहीं। तुलसीदासजी ने रामचरितमानस का आरम्भ 'वर्णांना' से किया है, जो मगण पड़ता है। हम लोग भी आदि गण, मगण, भगण, नगण रखते थे। किन्तु, अब गणों का विचार भी खत्म है, न कोई कवि दग्धाक्षरों से डरता है।

साहित्य और समाज राष्ट्रकवि, साहित्यकार, ओजस्वी वक्ता और प्रखर चिन्तर रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य की विभिन्न विधाओं और समस्याओं को समर्पित चिन्तन पूर्ण अठारह निबन्धों का संकलन है। पठनीय और मननीय निबन्धों से सुसज्जित यह पुस्तक राष्ट्रकवि दिनकर के चिन्तन स्वरूप को उद्घाटित करने वाली एक श्रेश्ठ बौध्दिक कृति है।

रामधारी सिंह दिनकर जी की यह पुस्तक जहॉ एक तरफ परम्परा और भारतीय साहित्य, साहित्य पर विज्ञान का प्रभाव, साहित्य में आधुनिकता, समाजवाद के अन्दर साहित्य, साहित्य का नूतन ध्येय, कलाकार की सफलता, भविष्य के लिए लिखने की बात; लेखकों का कार्य शिविर, हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव, पाकिस्तान के पीछे साहित्य की प्रेरणा, श्री अरविन्द की साहित्यिक मान्यताएँ जॉर्ज रसल का साहित्य–चिन्तन आदि निबन्धों द्वारा समाज और साहित्य पर प्रकाश डालती है तो दूसरी तरफ अर्धनारीश्वर, कला, धर्म और विज्ञान, आउट–साइडर, रवीन्द्रनाथ की राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता अभारतीय हैं?, महात्मा टॉलस्टॉय जैसे विषयों को भी हमारे सम्मुख लाती है। साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। साहित्य समाज को प्रतिबिंब भी है और मार्गदर्शक भी। मानव समाज का हित चिंतन और उसका पथ प्रदर्शन करना साहित्य का लक्ष्य है। साहित्य समाज की चेतना को विकसित करता है। बिना किसी लक्ष्य के लिखा गया साहित्य कूड़ा कचरा मात्र है। इसलिए ऐंसी सामग्री ही साहित्य की श्रेणी में मानी जानी चाहिए, जो ज्ञान को बढ़ाए और समाज का मागदर्शन करे। समय–समय पर साहित्यकारों ने समाज की तत्कालीन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है और उनका समाधान भी सुझाया है। ऐसे साहित्यकारों का समाज ऋणी है। आजकल ऐसा साहित्य लिखने का ज्यादा चलन है, जो विवादों को आमंत्रित करे या फिर समाज में वैमनस्यता बढ़ाए। इस प्रवृत्ति पर लगाम जरूरी है। साहित्यकार अपने सामाजिक सरोकरों से आंख नहीं चुरा सकते। अभिव्यक्ति ही स्वतंत्रता के नाम पर कुछ भी लिखने की छूट नहीं दी जा सकती। जो साहित्यकार ऐसा कर रहे हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

साहित्य मन को ताज़ा करने और प्रेरणादायक के लिए लिखा है कि कुछ मतलब है। यह महान दिमाग के विचारों और भावनाओं को रिकॉर्ड करता है। यह दो तरीके के माध्यम से अपनी बात और अपने ढंग के माध्यम से आकर्षित करती है। आत यह जो लोग पढ़ने के लिए कुछ रास्ते में रूचि रखते हैं कि इस तरह का होना चाहिए। पाठक को भाता हो और ज्ञान के अपने फंउ के लिए कहते हैं के रूप में होगा तरीके से ऐसा होना चाहिए।

हम एक ऐसे समाज में रहते हैं। वह यह है कि समाज में रहने वाले लोगों के बीच संबंधों और आपसी संबंध रहे हैं। हम समाज में रहते हैं, जो हमारे साथी पुरूषों, उनके विचारों और भावनाओं को, उनकी पसंद और नापसंद के बारे में सुनना पसंद है। हम भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा की शक्ति है, तो स्वाभाविक रूप से, हम साहित्य बनाने के लिए रास्ते पर अच्छी तरह से कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, साहित्य के विषय कुछ फार्म या अन्य में समाज है। कवि ने अपनी भावना व्यक्त किया और उनकी कविता पढ़ने के जो हम रूचि रखते हैं और उसे और खुद के साथ एक पर लग रहा है। आखिर, समाज कवि या लेखक चाहता है कि संचार के माध्यम से आदमी और आदमी के बीच फेलोशिप के इस बंधन है।

साहित्य सामाजिक सहानुभूति व्यक्त करता है, तो स्वाभाविक रूप से यह हमारे मन और दृष्टिकोण पर कुछ सकारात्मक प्रभाव व्यायामक रने के लिए बाध्य है। सोसायटी में रहने वाले एक तरह से साहित्य के प्रति प्रतिक्रिया। एक प्रेरणादायक कविता समाज पर सामान्य प्रभाव पैदा करता है। यह हमारी भावनाओं और कल्याण के लिए उत्साह तवनेमे.

शेली कवियों मानव जाति के अनुत्तरित विधायकों का आहवान किया है। एक विधायक के समारोह में, पुरूशों का पालन कर सकते हैं कि कार्रवाई का एक बसे बेशक अपराध करना है। काव्य और साहित्य को आम तौर पर एक शांत और विनीत तरीके से ऐसा करते हैं। उपन्यास मानव मन की दिशा बदल दी और जीवन के हमारे तरीके को बदल दिया है कि प्रस्ताव आंदोलनों में स्थापित किया है करने के लिए जाना जाता है।

स्माज पर साहित्य का प्रभाव सीधे या परोक्ष रूप से महसूस किया है। इस प्रकार मिस स्टोव की ''चाचा टॉम के केबिन'' उन दिनों की अमरीका में साहित्य और जीवन में गुलामी के खिलाफ एक

आंदोलन के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार था। डिकेंस के उपन्यास आवश्यक के लिए बुला रही है, समाज में विनियमित करने और सामाजिक खामियों को दूर करने के लिए एक भावना पैदा करने में एक अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा सुधारों।

शरतचंद्र के उपन्यास हमारे समाज में महिलाओं के रूप में संबंध रूढ़िवाद को तोड़ने में एक लंबा रास्ता तय हो गया है। लेकिन उसे यह भी स्पष्ट है कि हम साहित्य में रूचि रखते हैं, और अपने प्रभाव का कथन से हमें ले जाने के लिए बाध्य कर रहा है। साहित्य जीवन की विद्या से बाहर कर दिया है। इसमें कोई शक नहीं, यथार्थवादी कलाकार ध्यान देने के लिए कुछ विषमताएं और प्रचुरता से जीवन के ब्तनकमत पहलुओं लाता है। लेकिन पूरी तरह से जीवन में पता करने के लिए, उज्ज्वल पक्ष बल्कि जीवन की जोड़दार और अंधेरे की ओर न केवल नाम से जाना है।

इस प्रकार, समाज साहित्य बनाता है। यह समाज के दर्पण के रूप में वर्णित किया जा सकता है। लेकिन प्रतिबिंब की गुणवत्ता और प्रकृति वह अपने दृष्टिकोण या प्रतिक्रियावादी में प्रगतिशाली है, चाहे मन के लेखक के रवैये पर निर्भर करता है।

स्वाभाविक रूप से, रूढ़िवादी विचारधारा वाले लेखक सबसे अच्छा संभव तरीके से जीवन के पारंपारिक तरीके डाल, जो सामाजिक जीवन के उन पहलुओं को तनाव होगा। उदाहरण के लिए, वह इतने पर सदियों पुराने आदर्शों, धर्म के प्रति सम्मान, महिला की शुध्दता और के लिए श्रध्दा पर एक उच्च मूल्य की स्थापना की जाएगी। दूसरी ओर, एक–प्रगतिशील लेखक पुराने आदर्शों मानव मन की प्रकृतिक स्वतंत्रता पर मजबूरी के रूप में, नए आदर्शों मुक्ति और लग रहा है कि समाज के लिए आगे बढ़ के लिए निर्धारित एक अप्रतिबंधित माहौल में आदमी और महिलाओं की मुक्त आवाजाही अपंग कार्य दिखाने के लिए कैसे करते हैं जाएगा जीवन के नए तरीकों को नए तरीकों को भेज देता है।

संदर्भग्रंथ :
1. नालंदा विशाल शब्दसागर–संपा.श्री.नवलजी–पृ. 1407
2. आधुनिक हिंदी शब्दकोश–संपा.गोविन्द चातक–पृ.605
3. राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. मुहम्मद फरीदुद्दीन–पृ.17
4. हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना–डॉ.रत्नाकर पाण्डेय–पृ.10
5. गणनांचल (पत्रिका अक्तूबर–दिसंबर, 2008–संपा.अजकुमार गुप्त पृ. 42
6. वही – वही – वही
7. शीराजा (मा. पत्रिका) अप्रेल–मई–अंक 1, 1984–पृ.70,71
8. http://pustak.org/home.php?bookid=6859
9.http:www.preservearticles.com/201103284772/literature-and-society.html

Name : Wadje R. K.
Designation : Assistant Professor, Department of Hindi
Education :M.A. Hindi (NET), M. Phil and Ph.D (Ongoing)
Subject : Hindi
Experience :9 Years
Area of Interest and Specialization :
Member, Hindi Lecturer Association, Solapur.
Member, Hindi Vikas Munch, Solapur.
Convenor, Enrichment Committee, Solapur.
Mobile :+91 9881694910
Email : rajendrawadje@gmail.com

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net